डॉ. जिम स्पीगल, धर्म का दर्शन, सत्र 3, ईश्वरवादी तर्क, भाग 2, उद्देश्यवादी तर्क

© 2024 जिम स्पीगल और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जेम्स स्पीगल द्वारा धर्म के दर्शन पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 3 है, आस्तिक तर्क, भाग 2, उद्देश्य संबंधी तर्क।

ठीक है, हम पहले ही ईश्वर के अस्तित्व के लिए ब्रह्माण्ड संबंधी तर्क के बारे में बात कर चुके हैं।

आइए अब हम अपना ध्यान दो अन्य आस्तिक तर्कों की ओर मोड़ें: उद्देश्यवादी तर्क, या डिजाइन से तर्क, और मन या चेतना से तर्क। तो हम उद्देश्यवादी तर्क, या डिजाइन से तर्क से शुरू करेंगे, जो दुनिया में स्पष्ट डिजाइन से लेकर एक अलौकिक डिजाइनर के अस्तित्व तक का तर्क देता है। उद्देश्यवादी तर्क इसलिए कहा जाता है क्योंकि वहाँ मूल शब्द, टेलोस, का अर्थ उद्देश्य, लक्ष्य या अंत है।

विचार यह है कि प्रकृति में सभी प्रकार की सजीव और निर्जीव संस्थाएँ और संरचनाएँ मौजूद हैं, जो यह सुझाव देती हैं कि दुनिया को कुछ खास उद्देश्यों या लक्ष्यों को पूरा करने के लिए जानबूझकर व्यवस्थित किया गया है। इसलिए, ईश्वर के अस्तित्व के लिए तर्क, जो दुनिया के बारे में उन तथ्यों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, उन्हें उद्देश्यपूर्ण तर्क कहा जाता है। अब, डिज़ाइन के विभिन्न प्रकार हैं।

जब हम डिज़ाइन के बारे में बात करते हैं, तो हम कई अलग-अलग चीज़ों का उल्लेख कर सकते हैं। हम डिज़ाइन के बारे में व्यवस्था, उद्देश्य, जटिलता, जटिलता, सुंदरता और सूचना के भीतर एकता के रूप में बात कर सकते हैं। इसलिए, व्यवस्था के रूप में डिज़ाइन का एक उदाहरण देने के लिए, मुझे याद है कि कुछ दशक पहले मैंने एक नेत्र परीक्षण करवाया था और इस ऑप्टोमेट्रिस्ट के साथ मानव आँख की टेलीओलॉजी के बारे में बात की थी।

उन्होंने मुझे बताया कि मानव आँख के लेंस में ऊतक की सात परतें होती हैं, जो हमारी दृष्टि को धुंधला होने से बचाने के लिए बस कुछ ही माइक्रोन की दूरी पर होनी चाहिए। अगर यह नरम है, यह थोड़ा सा भी है, तो हमें स्पष्ट दृष्टि नहीं मिलेगी। इसलिए, मानव आँख के लेंस में ऊतक की उन विभिन्न परतों के क्रम के संदर्भ में, उन्हें कार्यात्मक होने के लिए ठीक उसी तरह होना चाहिए।

इसलिए, कई लोग तर्क देंगे कि यह व्यवस्था के रूप में डिजाइन के रूप में योग्य होगा। अस्थायी व्यवस्था भी है। हम विभिन्न चक्रों, जैविक लय या चक्रों, जैसे मानव शरीर, मासिक धर्म चक्र, नींद चक्र और अस्थायी चक्रों के अन्य रूपों के बारे में बात कर सकते हैं जो स्वस्थ, कार्यात्मक जीवन के लिए महत्वपूर्ण हैं।

और उद्देश्य के रूप में डिजाइन के संदर्भ में, यहां तक कि जो लोग आस्तिक नहीं हैं, वे भी उद्देश्य के बारे में बात करेंगे, जैसे कि अग्न्याशय या फेफड़ों का उद्देश्य रक्त को ऑक्सीजन देना, हृदय का उद्देश्य रक्त पंप करना। हमारे शरीर में सभी अलग-अलग अंग विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं , और हम उन्हें डिजाइन के रूप में देख सकते हैं। और इस तरह से, विभिन्न प्रकार के डिजाइन चलते हैं।

विलियम पैली 18वीं सदी के अंत में एक प्राकृतिक धर्मशास्त्री थे, जिन्होंने अपनी घड़ी की उपमा को प्रसिद्ध किया। मूल रूप से, उनका तर्क यह था कि हम घड़ियों या घड़ियों जैसी मानवीय कलाकृतियों में एक निश्चित डिज़ाइन को पहचानते हैं। हम पहचानते हैं कि ये चीज़ें, भले ही हमने उन्हें मानव इंजीनियरों द्वारा निर्मित या निर्मित होते न देखा हो, हम जानते हैं कि उन्हें किसी ने बनाया होगा क्योंकि वे बहुत अच्छी तरह से डिज़ाइन किए गए हैं।

इसलिए, पेली का मानना है कि दुनिया, मान लीजिए, एक घड़ी या मानव निर्मित उपकरण के समान है, केवल किसी भी घड़ी या घड़ी की तुलना में मौलिक रूप से अधिक जटिल और कार्यात्मक है। इसलिए, उनका मूल तर्क यह है कि एक मानव कलाकृति, जैसे कि एक घड़ी, में व्यवस्था, जटिलता और एकता होती है। उस चीज़ के भागों का आपसी सहयोग होता है।

यह एक लक्ष्य की ओर काम करता है, इस मामले में, हमारे लिए समय बनाए रखने का लक्ष्य। इसे एक बुद्धिमान डिजाइनर द्वारा बनाया गया है, जबकि दुनिया दूसरा आधार है। जिस दुनिया में हम रहते हैं वह व्यवस्था, जटिलता, एकता और भागों के आपसी सहयोग को प्रदर्शित करती है और एक लक्ष्य की ओर काम करती है। इसलिए, दुनिया में संभवतः बुद्धिमान डिजाइनर हैं।

यह मूल तर्क है जिसकी पैली के बाद से ही चौतरफा आलोचना की जाती रही है, जिसमें प्रसिद्ध डेविड ह्यूम भी शामिल हैं, जो एक स्कॉटिश दार्शनिक थे और एक संशयवादी थे, जिन्होंने पैली द्वारा 1801 में लिखे अपने एक काम में इसे प्रकाशित करने से पहले ही इस तर्क की आलोचना की थी। ह्यूम को मरे हुए एक चौथाई सदी हो चुकी थी, और उन्होंने पहले ही इस तर्क की बहुत अच्छी तरह से आलोचना की थी। यह एक लोकप्रिय तर्क है, लेकिन इसमें एक बहुत बड़ी खामी है, वह यह है कि, जैसा कि ह्यूम बताते हैं, दुनिया में जो स्पष्ट डिजाइन हम देखते हैं, उसके लिए अन्य प्राकृतिक व्याख्याएँ भी हो सकती हैं।

उन्होंने कहा कि घड़ी और दुनिया के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर है, यानी हमने लोगों को घड़ियाँ बनाते देखा है। हमने इंजीनियरों को समय मापने वाले उपकरणों का निर्माण, डिजाइन और निर्माण करते देखा है, लेकिन किसी ने कभी किसी भगवान को ब्रह्मांड बनाते नहीं देखा, है न? मुझे पता है कि मैंने ऐसा नहीं देखा है, या कम से कम मैंने नोवा का वह एपिसोड मिस कर दिया है। इसलिए, जब बात टेलियोलॉजिकल तर्क के उस संस्करण की आती है तो यह एक महत्वपूर्ण दोष है।

हाल के वर्षों में, हालांकि, प्रकृति के नियमों के बारे में वैज्ञानिक समझ के विकास के साथ, डिजाइन तर्क का एक नया रूप सामने आया है जिसे फाइन-ट्यूनिंग तर्क कहा जाता है। और

यहाँ विचार यह है कि ब्रह्मांड जीवन की संभावना के लिए बहुत ही सूक्ष्म रूप से ट्यून किया गया है। यहाँ, हम निर्जीव डिजाइन पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।

हम जीवित प्राणियों में डिज़ाइन और फ़ाइन-ट्यूनिंग के बारे में भी बात कर सकते हैं, जब बात बायोकेमिस्ट्री या जेनेटिक्स की आती है। लेकिन फ़ाइन-ट्यूनिंग तर्क के इस संस्करण के फ़ोकस के संदर्भ में, जिसके बारे में हम बात करेंगे, वह निर्जीव डिज़ाइन से संबंधित है, बस भौतिक ब्रह्मांड में, आपके पास प्रकृति के ये सभी नियम हैं जो जीवन की संभावना के लिए अभिसरित होते हैं। और रॉबिन कोलिन्स इस फ़ाइन-ट्यूनिंग तर्क के सबसे प्रमुख रक्षकों में से एक हैं।

तो, हम तर्क के उनके संस्करण के बारे में बात करेंगे। और वह कुछ बुनियादी मान्यताओं से शुरू करते हैं। उनमें से एक बस वह अवलोकन है जो कोई भी ब्रह्मांड विज्ञानी, कोई भी भौतिक विज्ञानी आपको बताएगा कि ब्रह्मांड इस अर्थ में ठीक-ठाक है कि यह जीवन के लिए आवश्यक भौतिक मापदंडों का एक सटीक संतुलन प्रदर्शित करता है।

किसी भी ब्रह्मांड में जीवन होने के लिए, आपको उस ब्रह्मांड में कुछ स्थिरता और जटिलता की आवश्यकता होती है, तभी जीवन संभव हो सकता है। इसलिए, जब गुरुत्वाकर्षण के व्युत्क्रम वर्ग नियम जैसे नियमों की बात आती है, तो हम यही देखते हैं: वस्तुएँ अन्य वस्तुओं की ओर उनके द्रव्यमान के समानुपातिक और उनके बीच की दूरी के वर्ग के व्युत्क्रमानुपाती रूप से आकर्षित होती हैं। यह बिल्कुल ज़रूरी है कि वह नियम लागू हो, साथ ही अवोगाद्रो स्थिरांक, मजबूत और कमजोर परमाणु बल, और दर्जनों अन्य जिन्हें हम प्राकृतिक नियम कहते हैं, जीवन संभव होने के लिए लागू हों।

और अंत में उस बिंदु पर पहुंच गया जहां, आप जानते हैं, बहुत मामूली विचलन जीवन को असंभव बना देगा। बिग बैंग विस्तार दर एक और होगी। बिग बैंग में, ब्रह्मांड का विस्तार ठीक उसी दर से हुआ होगा जिस दर से इसका विस्तार हुआ है क्योंकि अगर यह अपने विस्तार में थोड़ा भी धीमा होता, तो यह अपने आप ही ढह जाता, और वास्तव में आपके पास कोई ब्रह्मांड नहीं होता।

अगर यह इससे थोड़ी सी भी तेजी से फैलता, तो यह संभव था; पदार्थ बहुत अधिक बिखरा हुआ होता, और जीवन को सहारा देने वाले तारे नहीं बन पाते। इसलिए, बिग बैंग विस्तार दर, जो कि वास्तव में है, जीवन की संभावना के लिए भी आवश्यक है। ध्यान रखें कि यह केवल एक ऐसा ब्रह्मांड बनाने के लिए है जो जीवन की अनुमति दे।

इसका ब्रह्मांड में जीवन के वास्तविक निर्माण या विकास से कोई लेना-देना नहीं है, जिसमें ये भौतिक पैरामीटर हैं। हम बस एक ऐसे ब्रह्मांड के बारे में बात कर रहे हैं जो जीवन की अनुमति देता है। कोलिन्स ने जिस दूसरी प्रमुख धारणा पर ध्यान दिया है, वह है पुष्टि का सिद्धांत।

जब दो प्रतिस्पर्धी परिकल्पनाओं पर विचार किया जाता है, तो एक अवलोकन उस परिकल्पना के पक्ष में सबूत के रूप में गिना जाता है जिसके तहत अवलोकन सबसे अधिक संभावित या सबसे

कम असंभावित है। इसलिए, हमारे पास मूल रूप से दो परिकल्पनाएँ हैं जो यहाँ प्रतिस्पर्धा कर रही हैं। एक है आस्तिकता, कि ब्रह्मांड का एक बुद्धिमान डिज़ाइनर है।

दूसरा नास्तिक दृष्टिकोण है; कोई बुद्धिमान डिज़ाइनर नहीं है, और कोई ईश्वर नहीं है। इनमें से कौन सी परिकल्पना ब्रह्मांड के बारीक-से-बारीक होने के संदर्भ में हमारे द्वारा देखे गए अवलोकन से सबसे अच्छी तरह से पुष्ट होती है? तो, कोलिन्स के संस्करण के अनुसार, मुख्य तर्क यह है: कि आस्तिकता को देखते हुए ब्रह्मांड का बारीक-बारीक होना असंभव नहीं है। यह एक बहुत ही मामूली दावा है, है न? वह यह नहीं कह रहा है कि यह संभव है।

मैं, एक आस्तिक के रूप में, व्यक्तिगत रूप से यह मानता हूँ कि ईश्वर की प्रकृति और अस्तित्व को देखते हुए, हम एक सुव्यवस्थित ब्रह्मांड की अपेक्षा करेंगे। आपको इतना दूर जाने की ज़रूरत नहीं है। आपको बस इस तर्क के लिए स्वीकार करना होगा कि ब्रह्मांड का सुव्यवस्थित होना असंभव नहीं है। यह असंभव नहीं है।

दूसरा, ब्रह्मांड का फाइन-ट्यूनिंग बहुत ही असंभव है, और यह नास्तिक एकल-ब्रह्मांड परिकल्पना के तहत एक अल्पमत है। संभावनाएँ इतनी दूर हैं कि यह बहुत ही छोटी हैं कि ब्रह्मांड का फाइन-ट्यूनिंग जैसा कि हम देखते हैं, अपने आप ही हो सकता है, संभावनाएँ गायब होने के बिंदु तक। निष्कर्ष यह है कि फाइन-ट्यूनिंग डेटा आस्तिकता के पक्ष में मजबूत सबूत प्रदान करता है।

यहाँ, हमें यह कहने की ज़रूरत नहीं है कि यह ईश्वर के अस्तित्व को साबित करता है। जो मायने रखता है वह है सबूत। हम इस पर बहस कर सकते हैं।

हमें वहाँ जाने की ज़रूरत नहीं है, जब तक कि हम यह निष्कर्ष निकाल सकें कि यह बहुत मज़बूत सबूत प्रदान करता है। आपके पास यहाँ ईश्वर के अस्तित्व के लिए संभावित रूप से मज़बूत तर्क है। तो यह तर्क है, और कोलिन्स इस तर्क पर कई आपत्तियों पर विचार करते हैं।

एक यह है कि शायद प्रकृति का एक और अधिक मौलिक कानून, एक बुनियादी कानून है, जो यह तय करता है या गारंटी देता है कि प्रकृति के सभी विशेष कानून जिनसे हम परिचित हैं, वे बिल्कुल वैसे ही होंगे, जैसे वे हैं, कि वे नियम बिल्कुल वैसे ही होंगे जैसे वे हैं। इसलिए, हमें किसी भी तरह के बुद्धिमान डिजाइनर से अपील करने की आवश्यकता नहीं है। हम प्रकृति के एक और अधिक मौलिक कानून की अपील कर सकते हैं, ऐसा विचार है।

यहाँ, कोलिन्स का जवाब है कि यह सिर्फ़ शुद्ध अटकलें हैं। हमारे पास ऐसे अधिक मौलिक कानून पर विश्वास करने का कोई स्वतंत्र कारण नहीं है जो यह तय करता हो कि इन अन्य कानूनों के पैरामीटर क्या होंगे। इसलिए, इसे एड हॉक तर्क कहा जाता है।

आपको किसी विशेष प्रस्ताव का समर्थन करने वाले स्वतंत्र साक्ष्य की आवश्यकता है जो उस विश्वास का खंडन करता है जिसे आप चुनौती देना चाहते हैं। लेकिन यहाँ अधिक मौलिक कानून के लिए स्वतंत्र साक्ष्य क्या है? कोई भी नहीं है। वैसे भी, अधिक मौलिक कानून के लिए यह अपील वास्तव में समस्या को केवल एक कदम पीछे ले जाती है।

क्योंकि अगर प्रकृति का कोई और भी मौलिक नियम है जो यह गारंटी देता है कि ये सभी अन्य विशेष नियम ठीक वैसे ही स्थापित होंगे जैसे वे हैं, जीवन की संभावना के लिए बिल्कुल सही, तो हम पूछ सकते हैं, अच्छा, इसका क्या कारण है? कि हम इतने भाग्यशाली हैं कि प्रकृति का यह मौलिक नियम होगा। यह निश्चित रूप से हमें यह पूछने के लिए प्रेरित करेगा, हम्म, क्या यह अपने आप में एक तरह के बुद्धिमान डिजाइन का सुझाव नहीं देता है कि ऐसा मौलिक नियम होगा जो एक सुव्यवस्थित ब्रह्मांड की गारंटी देता है? एक और आपत्ति यह बताती है कि जहाँ तक हम जानते हैं, जीवन के अन्य रूप अलग-अलग भौतिक मापदंडों के तहत मौजूद हो सकते हैं। हम जो कुछ भी जानते हैं वह इस ब्रह्मांड में जीवन है जहाँ हमारे पास प्रकृति के ये नियम हैं जो इस तरह से निर्धारित हैं।

हो सकता है कि किसी बहुत अलग ब्रह्मांड में, ऐसे अन्य जीवन रूप हों जिनकी हम कल्पना नहीं कर सकते क्योंकि हम इसी ब्रह्मांड में रहते हैं। इस पर कोलिन्स का जवाब है कि किसी भी जीवित प्रणाली में, जहाँ तक हम उसकी कल्पना कर सकते हैं, एक निश्चित मात्रा में जटिलता और स्थिरता होनी चाहिए। जैविक दृष्टिकोण से जीवन की बुनियादी समझ में कम से कम कुछ हद तक चयापचय शामिल है।

इसके लिए अत्यधिक जटिलता के साथ-साथ स्थिरता और एकता की भी आवश्यकता होती है। जीवन के बारे में हमारी समझ और इसके बारे में हमारी पूरी अवधारणा ही बहुत कुछ तय करेगी। हम केवल उसी के आधार पर आगे बढ़ सकते हैं जो हम यहाँ जानते हैं।

जीवन के बारे में हम जो कुछ भी वैज्ञानिक रूप से जानते हैं, वह यह है कि इसमें ऐसी संगठित जटिलता शामिल है। भले ही चयापचय प्रणाली के अन्य रूप हों जिनका हमने कभी अनुभव नहीं किया है, लेकिन हम जानते हैं कि उन्हें बहुत संगठित और जटिल होना होगा, लेकिन साथ ही एकीकृत और स्थिर भी होना होगा। ऐसा संभव होने के लिए आपको प्रकृति के नियमों को मूल रूप से वहीं स्थापित करने की आवश्यकता है जहां वे हैं।

तीसरी आपत्ति कई ब्रह्मांडों की परिकल्पना है। क्या होगा अगर हमारा ब्रह्मांड एकमात्र ब्रह्मांड न होकर असंख्य ब्रह्मांडों में से एक है जो किसी तरह से निर्मित हुआ है, जिसे हम नहीं जानते कि कैसे, शायद किसी गहरे आध्यात्मिक ब्रह्मांड-उत्पादक तंत्र द्वारा जो खरबों और चौगुने ब्रह्मांडों को उगल रहा है? यदि आपको पर्याप्त ब्रह्मांड मिलते हैं, तो यह सदियों और युगों के समय के लिए टाइपराइटर के कमरे में कहावत वाले चिम्पांजी की तरह है; आखिरकार, उनमें से एक शेक्सपियर का नाटक बनाने जा रहा है।

अगर हम किसी तरह असंख्य ब्रह्मांड प्राप्त कर सकते हैं, तो यह उन सभी नियमों के यादृच्छिक अभिसरण के खिलाफ बाधाओं को दूर कर देगा जो जीवन की संभावना के लिए बिल्कुल सही हैं। तो यही कई ब्रह्मांडों या कई ब्रह्मांडों की परिकल्पना की अपील है। हम इस पर क्या कहते हैं? कोलिन्स का जवाब है कि अन्य चीजें समान हैं, और हमें हमेशा उस परिकल्पना के साथ चलना चाहिए जिसके लिए हमारे पास स्वतंत्र सबूत हैं।

फिर से, क्या हमारे पास ब्रह्मांड जनरेटर या असंख्य अन्य वैकल्पिक ब्रह्मांडों के अस्तित्व के लिए कोई स्वतंत्र सबूत है? हमारे पास निश्चित रूप से बहुत सी हॉलीवुड फ़िल्में और टीवी शो हैं जो समानांतर ब्रह्मांडों या कई ब्रह्मांडों के आधार पर काम करते हैं। हम इसे सौंदर्य के दृष्टिकोण से दिलचस्प पाते हैं, ठीक वैसे ही जैसे समय यात्रा वाली फ़िल्में और किताबें। यह सब बहुत मनोरंजक है।

या अदृश्यता। पिछले हफ़्ते मैंने एच.जी. वेल्स की किताब, द इनविजिबल मैन पढ़ी। मैंने इसे पहले कभी नहीं पढ़ा था।

बढ़िया किताब। यह तकनीक और अप्रत्याशित खतरों या जोखिमों के बारे में सभी तरह के सबक से भरी हुई है, साथ ही इस मामले में अदृश्यता के साथ शामिल होने वाले खतरों से भी भरी हुई है। इसलिए, हम इन चीजों के बारे में एक काल्पनिक सेटिंग में बात कर सकते हैं।

कई ब्रह्मांडों में अदृश्यता और समय यात्रा। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि इसके लिए कोई स्वतंत्र सबूत है। और कई ब्रह्मांडों के लिए कोई स्वतंत्र सबूत, निश्चित रूप से कोई वैज्ञानिक सबूत नहीं है।

अब, यह संभव हो सकता है; हम इसकी कल्पना कर सकते हैं और इसकी कल्पना कर सकते हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि इसके लिए कोई स्वतंत्र सबूत है। जब हम इस मामले में डिजाइन के लिए, ईश्वर के अस्तित्व के लिए सबूतों के बारे में बात कर रहे हैं, तो डिजाइन के लिए स्पष्ट सबूतों को कमज़ोर करने के लिए किसी तरह का खंडन करने के लिए, इसे कुछ अनुभवजन्य, कुछ स्वतंत्र आधारों पर आधारित होना चाहिए, और यही वह है जो हमारे पास यहाँ नहीं है। तो फिर, यह एक तदर्थ परिकल्पना है।

और इसे परिभाषित करने के लिए, एक तदर्थ परिकल्पना एक प्रस्ताव या सिद्धांत है जिसे किसी विशेष सिद्धांत को आपत्ति से बचाने के लिए तैयार किया जाता है और जो स्वतंत्र रूप से परीक्षण योग्य नहीं है। यह निश्चित रूप से बहु ब्रह्मांड थीसिस पर लागू होता है। आप इसका परीक्षण कैसे कर सकते हैं जब यह हमारे ब्रह्मांड से परे किसी चीज़ का उल्लेख कर रहा हो, जो विज्ञान की स्वाभाविक समझ में, विज्ञान या वैज्ञानिक सिद्धांत को चुनौती देता प्रतीत होता है?

विज्ञान की एक मानक अवधारणा यह है कि यह एक अन्वेषण है, भौतिक ब्रह्मांड, हमारे ब्रह्मांड का अध्ययन है। एक बार जब आप ऐसी चीजों का प्रस्ताव करना शुरू कर देते हैं जो इस ब्रह्मांड से परे जाती हैं, तो आप अलौकिक प्रतीत होने वाली चीजों में प्रवेश कर जाते हैं। इसलिए आप तर्क दे सकते हैं कि यह बहु ब्रह्मांड सिद्धांत अपने आप में एक तरह का अलौकिक दृष्टिकोण है, जो विडंबनापूर्ण होगा क्योंकि, इस संदर्भ में, इसका उद्देश्य अलौकिक ईश्वर में विश्वास को कम करने या उसका खंडन करने का प्रयास करना है।

कोलिन्स ने यह भी कहा कि बहु ब्रह्मांड परिकल्पना डिज़ाइन समस्या को एक स्तर ऊपर ले जाती है। क्योंकि अगर कोई ब्रह्मांड जनरेटर है, अगर कोई ऐसी प्रणाली है जो इन सभी खरबों और खरबों ब्रह्मांडों का उत्पादन करती है, तो स्वाभाविक रूप से यह सवाल उठता है कि इसे किसने स्थापित किया? इसे कैसे व्यवस्थित किया गया? यह एक बहुत ही प्रभावशाली प्रणाली है जो एक

ब्रह्मांड और असंख्य ब्रह्मांडों का उत्पादन करती है। और यह ठीक वैसी ही चीज़ है जो किसी प्रकार की अलौकिक शक्ति का सुझाव देती है जो अकल्पनीय रूप से महान और प्रतिभाशाली और बुद्धिमान होने के साथ-साथ शक्तिशाली भी है।

तो यह फाइन-ट्यूनिंग के रूप में डिजाइन से तर्क है। ठीक है, तो हम यहाँ से अगले आस्तिक तर्क की ओर बढ़ेंगे, जो मन से तर्क है। यह एक आस्तिक प्रमाण या आस्तिक तर्क है, जो चेतना के तथ्य, विशेष रूप से मानव चेतना से, इसके लिए पर्याप्त कारण, ईश्वर के अस्तित्व तक तर्क करता है।

इसे कई बार तर्कसंगतता से तर्क, कभी-कभी मानवशास्त्रीय तर्क के रूप में भी जाना जाता है। तो , इसे स्पष्ट करने के लिए, आइए मानव प्रकृति के दो प्रतिस्पर्धी विचारों के बारे में बात करके शुरू करें। ऐतिहासिक रूप से, ईसाई और अन्य आस्तिक मानते रहे हैं कि मनुष्य मूल रूप से एक शरीर और एक आत्मा, या आत्मा या मन है।

मैं एक आत्मा, आत्मा, मन हूँ। लेकिन इस तरह का द्वैतवाद मानव स्वभाव के बारे में सच है। हम शरीर और आत्मा हैं।

तो, हमारे बारे में कुछ आध्यात्मिकता है। दूसरी ओर, आपके पास भौतिकवाद है। भौतिकवादी, भौतिकवादी या प्रकृतिवादी मानते हैं कि दुनिया में सब कुछ, जिसमें मनुष्य भी शामिल है, पूरी तरह से भौतिकी के संदर्भ में वर्णित किया जा सकता है।

केवल पदार्थ या ऊर्जा ही अस्तित्व में है। भौतिक अवस्थाएँ अन्य भौतिक अवस्थाओं का कारण बनती हैं। और यह बात मनुष्यों के साथ-साथ प्रकृति में मौजूद हर चीज़ पर भी लागू होती है।

तो, आप और मैं सिर्फ़ पदार्थ का एक ढेर हैं। विभिन्न रासायनिक विन्यास और ऊर्जा अवस्थाएँ। बस इतना ही।

हमारे भौतिक शरीर से बढ़कर हमारे लिए कुछ भी नहीं है। यही भौतिकवाद है। तो आपके पास द्वैतवाद, मन-शरीर द्वैतवाद और भौतिकवाद है।

अब, मन-शरीर द्वैतवाद के लिए कई मानक तर्क हैं। उनमें से एक यह है कि तर्क जागरूकता या चेतना से है। ऐसा कैसे होता है कि पदार्थ या भौतिक प्राणी कभी सोचना या जागरूक होना शुरू कर देता है? यह तथ्य कि मनुष्य और अन्य जीवों में यह जागरूकता है कि वे अनुभव कर सकते हैं और हम सोच सकते हैं, कुछ ऐसा है जिसे स्पष्टीकरण की आवश्यकता है।

और कई लोग तर्क देते हैं कि अंततः कोई भौतिक व्याख्या नहीं है। व्यक्तिपरकता से तर्क है, जो निकटता से संबंधित है। और वह यह है कि यह व्यक्तिपरक चरित्र, अनुभव की प्रथम-व्यक्ति गुणवत्ता को संदर्भित करता है।

यह कुछ ऐसा है जो मुझे होने जैसा है। यह कुछ ऐसा है जो आपको होने जैसा है। आपके पास एक प्रथम-व्यक्ति परिप्रेक्ष्य है जिसे तीसरे-व्यक्ति विवरण में नहीं पकड़ा जा सकता है।

कई साल पहले, लगभग 50 साल पहले, थॉमस नेगल नामक एक प्रकृतिवादी दार्शनिक ने एक लेख लिखा था, जिसका शीर्षक था, चमगादड़ होना कैसा होता है? लेख में उनका कहना है कि चमगादड़ों में इकोलोकेशन नामक एक प्रकार की अवधारणात्मक क्षमता, संवेदी क्षमता होती है जो आपके और मेरे पास नहीं है, लेकिन चमगादड़ों में होती है, और डॉल्फ़िन और पोर्पोइज़ और व्हेल में होती है। और यह एक प्रकार की धारणा है जो व्हेल के पास होती है, जो मूल रूप से ध्वनि की तरंगों का उत्सर्जन करती है जो फिर उनके वातावरण में मौजूद किसी भी वस्तु से टकराती है, और यह, मुझे लगता है, उनके लिए एक प्रकार का आंतरिक मानसिक मानचित्र बनाती है। और हम इसके बारे में तीसरे व्यक्ति के संदर्भ में बात कर सकते हैं।

वैज्ञानिकों ने इकोलोकेशन का बहुत विश्लेषण किया है। लेकिन हम इकोलोकेशन की संवेदी क्षमता के बारे में चाहे कितने भी जानकार क्यों न हो जाएं, हम अभी भी नहीं जानते कि चमगादड़ या डॉल्फिन होना कैसा होता है जिसमें यह क्षमता होती है। इसे समझने के लिए आपको ऐसा प्राणी बनना होगा।

नेगल का यह कहना कि चेतना में इस तरह की अपरिवर्तनीय व्यक्तिपरकता है, यह अपरिवर्तनीय प्रथम-व्यक्ति गुण है। और भौतिकवादियों के लिए इसका हिसाब देना एक समस्या है क्योंकि, फिर से, एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, हम केवल दुनिया का तीसरे व्यक्ति का विवरण, हमारे शरीर और हमारे मस्तिष्क का तीसरे व्यक्ति का विवरण दे सकते हैं, और यह अनिवार्य रूप से सचेत अनुभव के इस प्रथम-व्यक्ति चरित्र को याद करने वाला है। इसलिए, भौतिकवाद की गंभीर सीमाएँ, कई लोग तर्क देंगे, हमारे बारे में कुछ ऐसी बात की ओर इशारा करती हैं जो भौतिक से परे है।

फिर एक तर्क है जानबूझकर, जो इस तथ्य पर केंद्रित है कि मानसिक अवस्थाओं में एक निश्चित विषय-वस्तु होती है। हमारे विचार, कई मामलों में, पारलौकिक होते हैं। इसलिए, मैं संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति जो बिडेन के बारे में सोच सकता हूँ।

जब मैं जो बिडेन के बारे में सोचता हूँ, तो मेरे विचार, मानो, मुझसे परे चले जाते हैं और इस व्यक्ति को संदर्भित करते हैं, जो, मेरा मानना है, अभी वाशिंगटन, डीसी में कहीं है। यह कैसे है? आप इस तरह की जानबूझकर की गई हरकतों को कैसे समझ सकते हैं जो हमारे अपने ग्रे मैटर से परे है? यह भी, किसी ऐसी चीज की ओर इशारा करता है जो भौतिकता से परे है। फिर निकट-मृत्यु अनुभवों से तर्क हैं, जो एक ऐसा विषय है जिसके बारे में हम अपने आप में विस्तार से बात कर सकते हैं, एनडीई, जैसा कि उन्हें कहा जाता है, वे लोग हैं जो अस्थायी रूप से मर जाते हैं, और उनका दिल धड़कना बंद हो जाता है।

उनका ईईजी या इलेक्ट्रोएन्सेफेलोग्राम भी सपाट हो सकता है। मस्तिष्क की कोई गतिविधि नहीं दिखती। फिर, कई मिनट बाद, वे होश में आते हैं और सभी तरह के समृद्ध अनुभवों की रिपोर्ट करते हुए वापस आते हैं, कई मामलों में, ऐसी बातें बताते हैं जो उन्होंने कहीं और देखी या सुनीं, जब उनकी आत्मा यात्रा कर रही थी, जैसे कि अस्पताल या उनके घर से परे।

बाद में आकर्षक विवरणों की जांच से इसकी पुष्टि होती है, जिनमें से कई पर किताबें और फिल्में बनी हैं। यह कुछ हद तक एक सांस्कृतिक घटना बन गई है, लेकिन यह मन के दर्शन के बारे में हमारी सोच के लिए उपयोगी है क्योंकि अगर इनमें से कोई भी अनुभव प्रामाणिक और वास्तविक है, और लोगों के लिए इस तरह से अपने शरीर से परे जाना संभव है, तो यह किसी तरह के मन-शरीर द्वैतवाद की ओर इशारा करता है। इसलिए, एनडीई मानव प्रकृति के एक तरह के द्वैतवादी दृष्टिकोण की पुष्टि करते प्रतीत होते हैं।

तो, ये सभी तर्क मन-शरीर द्वैतवाद का समर्थन करते हैं। हम इस बारे में इसलिए बात कर रहे हैं क्योंकि अगर मनुष्य के पास आध्यात्मिक पहलू, आत्मा या अलौकिक आत्मा है जिसका सिर्फ़ भौतिक या भौतिक शब्दों में हिसाब नहीं लगाया जा सकता, तो हमारी आत्माओं के लिए किसी तरह का अलौकिक कारण होना चाहिए।

और यह, ज़ाहिर है, भगवान या किसी तरह के निर्माता की ओर इशारा करता है। इसलिए, हम इस तरह से मन से तर्क को संक्षेप में प्रस्तुत कर सकते हैं। मनुष्यों के पास मन है; जैसा कि हमने बात की है , हम चेतना, धारणा, व्यक्तिपरकता और जानबूझकर जैसी मानसिक विशेषताओं को प्रदर्शित करते हैं , और हमारी मानसिक विशेषताओं को पूरी तरह से भौतिक शब्दों में नहीं समझाया जा सकता है।

तर्क तो यही है। इसलिए, हमारे मन के पीछे कोई अलौकिक कारण होना चाहिए। कोई ऐसी गैर-भौतिक चीज़ होनी चाहिए जिसने हमारे मन को जन्म दिया हो।

और वह कारण स्वयं एक मन या मानसिक क्षमताएँ होनी चाहिए जो हमारी अपनी मानसिक क्षमताओं का हिसाब दे सके। और संभवतः, यह एक बहुत शक्तिशाली, बुद्धिमान प्राणी होना चाहिए जो उतना ही व्यक्तिगत भी हो जितना हम हैं। व्यक्तिगत इस अर्थ में कि वह चुनाव करता है और उद्देश्यों के लिए कार्य करता है।

तो यह मन से तर्क है। मन-शरीर द्वैतवाद के विषय पर बहुत बहस हुई है। इस पर और मन से तर्क के खिलाफ आपत्तियां लगातार उठाई जाती रही हैं।

उनमें से एक यह है कि किसी अलौकिक मन के अस्तित्व का अनुमान लगाना हार मान लेना है। मानवीय व्यवहार, मानवीय विचार, हमारे अनुभव का एक हिस्सा है जिसका वैज्ञानिक रूप से मूल्यांकन किया जाता है। इसकी वैज्ञानिक, अनुभवजन्य वैज्ञानिक तरीकों से उचित रूप से जांच की जाती है।

इसलिए, हमारे मन के लिए एक अलौकिक सत्ता को स्पष्टीकरण के रूप में प्रस्तुत करना मूल रूप से वैज्ञानिक परियोजना को छोड़ना है। चेतना के लिए एक प्राकृतिक स्पष्टीकरण के खिलाफ समय से पहले ही बंद करना। मन के एक प्रमुख दार्शनिक और प्रकृतिवादी डैनियल डेनेट ने लगातार, बार-बार भौतिकवादी दृष्टिकोण के लिए एक तर्क के रूप में इस पर जोर दिया है।

हमें इतनी आसानी से हार नहीं माननी चाहिए और अलौकिक में विश्वास करना चाहिए, जब हमने विज्ञान को उन घटनाओं की व्याख्या करने का पर्याप्त मौका नहीं दिया है, जिनके बारे में हम यहाँ

बात कर रहे हैं। मुझे लगता है कि इसका एक अच्छा जवाब यह बताना होगा कि साक्ष्य के आधार पर उचित अनुमान लगाना हार नहीं है। यह वास्तव में तर्कसंगत सफलता है।

जानबूझकर और व्यक्तिपरकता और बुनियादी जागरूकता और एनडीई के बारे में हम जो जानते हैं, उसके आधार पर यह चेतना के क्षेत्र में कुछ अलौकिक होने का सकारात्मक सबूत है। तो, यह सिर्फ हार मान लेना नहीं है। यह सकारात्मक तथ्यों के आधार पर तर्क करना है, जो ठीक है, कुछ मामलों में वैज्ञानिक से ज़्यादा दार्शनिक हैं, लेकिन कुछ मामलों में, वे वैज्ञानिक भी हैं।

दूसरा, कुछ वस्तुएं जो अलौकिक मन के अस्तित्व का अनुमान लगाती हैं, वे अवैज्ञानिक हैं, और इसीलिए हमें ऐसा अनुमान नहीं लगाना चाहिए। आप अनिवार्य रूप से दर्शनशास्त्र का अध्ययन करने जा रहे हैं; कुछ लोग धर्मशास्त्र कहेंगे।

मुझे नहीं लगता कि आपको अपने तर्क में यहाँ अनिवार्य रूप से धार्मिक बनना होगा, लेकिन निश्चित रूप से, हो सकता है कि तर्क मुख्य रूप से दार्शनिक हो और मुख्य रूप से वैज्ञानिक न हो। क्या यह द्वैतवादी और आस्तिक के लिए एक समस्या है? खैर, इस बात पर जोर देना कि समाधान मानव चेतना के लिए एक प्राकृतिक व्याख्या प्रदान करने के अर्थ में वैज्ञानिक होना चाहिए, वास्तव में सवाल खड़ा करता है। ऐसा लगता है कि मुद्दे पर पूरा सवाल यही है।

क्या मानव चेतना को वैज्ञानिक और इसलिए भौतिक शब्दों में समझाया जा सकता है? यहाँ तर्क यह है कि, नहीं। चेतना को समझाने के लिए कुछ अलौकिक होना चाहिए, और यह ठीक इन अन्य प्रकार के अवलोकनों के कारण है, फिर से, उनमें से कुछ दार्शनिक हैं, कि हम निष्कर्ष निकालते हैं कि अंतिम व्याख्या केवल भौतिक नहीं है; यह केवल वैज्ञानिक नहीं है। इसलिए, इस बात पर जोर देना कि किसी भी घटना के बारे में स्पष्टीकरण वैज्ञानिक होना चाहिए, वास्तव में भौतिकवाद का पक्ष लेने का सवाल उठाता है, जबकि यही मुद्दा है।

क्या दुनिया में घटनाओं और घटनाओं के अलौकिक कारण हैं? और फिर, अंत में, एक आपत्ति है जो ओकम के उस्तरा या संयम के सिद्धांत को अपील करती है, कि अन्य चीजें समान होने पर, दो प्रतिस्पर्धी व्याख्याओं में से सरल को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। तो यह एक सरल व्याख्या होगी, है न, अगर हम भौतिक विज्ञान के संदर्भ में केवल पदार्थ के संदर्भ में मानव चेतना का हिसाब लगा सकें, और अलौकिक का सहारा न लें। लेकिन ओकम का उस्तरा कहता है कि किसी को अच्छे और पर्याप्त कारण या अन्य चीजें समान होने के बिना संस्थाओं को गुणा नहीं करना चाहिए। हमें सरल व्याख्या के साथ चलना चाहिए।

तो यह वास्तव में सवाल उठाता है, क्या यहाँ अन्य चीजें समान हैं? और वे समान नहीं हैं क्योंकि हमारे पास चेतना के बारे में बहुत सारी घटनाएँ, बहुत सारे तथ्य हैं जिन्हें भौतिकवादी शब्दों में नहीं समझाया जा सकता है। यह एक बहुत बड़ा असमानता है , और यह ठीक इसी कारण से है कि हम निष्कर्ष निकालते हैं, या आस्तिक निष्कर्ष निकालते हैं, कि मानव चेतना के लिए एक अलौकिक क्षेत्र और अलौकिक कारण होने चाहिए। इसलिए, मेरे तर्क पर कई आपत्तियाँ और उत्तर हैं।

यह डॉ. जेम्स स्पीगल द्वारा धर्म के दर्शन पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 3, आस्तिक तर्क, भाग 2, उद्देश्यवादी तर्क है।